E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

महात्मा गाँधी और असहयोग आन्दोलन

डॉ.जगजीत सिंह

विभाग इतिहास

Paper Rcevied date
05/04/2025
Paper date Publishing Date
10/04/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.15565865

IMPACT FACTOR
5.924

जीवन परिचय

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्तूबर 1869 को पोरबंदर में एक बनिया परिवार में हुआ था । गाँधी जी दुर्बल शरीर व सामान्य कद–काठी के व्यक्ति थे । महात्मा गाँधी अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इग्लैण्ड गए। जून 1891 में कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह भारत आए । भारत आने के लगभग दो वर्ष बाद गाँधी जी दादा अब्दुला नामक व्यक्ति के मुक्कदमें के तहत 1893 में दक्षिण अफ्रीका के लिए खाना हुए । दक्षिण अफ्रीका मे कई वर्ष बिताने के बाद गाँधी जी व जनवरी 1915 को भारत लोटे । गाँधी जी ने गोपाल कृष्ण गोखले के विचारों से प्रभावित होकर उन्हे अपना राजनीतिक गुरू के रूप में स्वीकार किया । आरम्भिक दिनों में गाँधी जी ने अग्रेजी हुकुमत के अधीन रह कर कार्य किया । जिससे प्रभावित होकर उन्हे कई शीर्षको व पदो से नवाजा गया ।

गाँधी जी का भारत आगमन :

मोहन दास करमचन्द्र गाँधी जो जल्द ही महात्मा कहे जाने लगे। 1915 में दक्षिण अफ्रीका से वापिस आए उस समय तक राष्ट्रवादी राजनीति में भागीदारी पश्चिमी शिक्षा प्राप्त पेशेवर लोगो के एक सीमित समूह कि ही थी । वे कुछ विशेष जातियों और समुदायों, कुछ विशेष भाषासी और आर्थिक समूहों के लोग थे तो समाज के दूसरे हिस्से कांग्रेस की राजनीति में भाग लेने से हिचकते रहे । कांग्रेस की इस आरम्भिक राजनीति के लक्ष्य भी सीमित थे और उसकी उपलब्धियाँ भी अपेक्षाकृत मामूली थी । 1907 में सूरत अधिवेशन में कांग्रेस नरमपंथी और गरमपंथी में बंट जाती है । 1915–17 तक राजनीति की ये दोनो धाराएँ एक अंधी गली में फस चूकी थी । इस समय एक राजनीति के एक खिलाड़ी की तरह उभरे गाँधी के ऊपर इन समूहों की असफलता का कोई कलंक नही था ।

भारत आने के बाद आरम्भ के तीन आंदोलनों चम्पारन, खेडा और अहमदाबाद के स्थानीय सत्याग्रह आन्दोलनों में महात्मा गांधी अपना लोहा मनबा चूके थे ।

केन्द्रीय खिलाफत कमेटी और असहायोग प्रस्ताव :

नवम्बर 1914 में दिल्ली में हुई आल इडिया खिलाफत कान्फेरेस में पहली बार असहयोग का आहावान किया गया । सेट्रल खिलाफत कमेटी की इलाहाबाद सभा (1–3 जून 1920) मे जुझारू तत्वों की विजय हुई जिन्हे अब गाँधी जी का समर्थन प्राप्त था । असहयोग का एक चार चरणों वाला कार्यक्रम किया गया (उपाधियों सिविल सेवाओं, सेना और पुलिस का बहिष्कार और

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अंततः करो की नाअदायगी । पूरे आन्दोलन का आरम्भ । अगस्त को एक हड़ताल के साथ होना था असहयोग पर मुस्लमानों की राय अभी विभाजित थी मरहम मौलाना अब्दुलबारी बगैरा उलेमा के साथ इस विषय पर खूब चर्चाऐं हुई कि मुसलमान शांति को, अंहिसा को कहा तक पाल सकते है । 1920 में गाँधी और शौकत अली ने इस कायक्रम के लिए जन–समर्थन जुटाने हेतु व्यापाक यात्राएँ की । हड़ताल को शानदार सफलता मिली क्योंकि तिलक का निघन भी इसी बीच हुआ और तब से असहयोग के लिए समर्थन बढता ही गया । गाँधी ने अब कांग्रेस पर तीन मुद्दो के लिए अभियान की ऐसी ही एक योजना अपनाने का दबाव डाला, ये तीन मु ` थे पंजाब के अत्याचार खिलाफत संबंधी, अन्याय और स्वराजः यंग इडिया में एक लेख में उन्होने घोषणा की कि "इस आन्दोलन के द्वारा वे एक साल में स्वराज दिलाऐगें ।" तो भी उन्होंने यह स्पष्ट नंही किया कि स्वराज से वास्तव में उनका क्या अभिप्राय था ।

कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन और असहयोग प्रस्ताव :

कांग्रेस कि महासिमिति ने असहयोग पर विचार करने के लिए काग्रेस का एक विशेष अधिवेशन (4–9मच) 1920 को कलकत्ता मे बुलाया लाला लाजपत राय सभापति चूने गए । मौलाना शौकत अली के कहने पर गाँधी जी ने असहयोग के प्रस्ताव का मसविदा रेलगाड़ी में तैयार किया । गाँधी जी के प्रस्ताव को बगांल के विपिन यद्र पाल के एक निस्पक संशोधन ुनंसपलिपदह ।उमदकउमदजद्ध के साथ और चितरंजन दास, जिन्ना या पाल जैसे पुराने नेताओ के कठोर विरोध के बावजूद स्वीकार कर लिया गया । इस अधिवेशन में उपाधियों को त्यागने, विद्यालयों, न्यायलयों और काऊसिलों के तिहरे बहिष्कार, विदेशी सामान के बहिष्कार तथा राष्ट्रीय विद्यालयों न्यायलयों और खादी को प्रोत्साहन देने का प्रस्ताव विषय समिति में 132 के मुकाबले 144 मतों से और खुले सत्र में कही अधिक मतो (873 के मुकाबले 1855) से स्वीकार कर लिया गया।

काग्रेस का नागपुर अधिवेशन तथा असहायोग प्रस्ताव :

22 जून को गाँधी जी ने बायसराय को पत्र लिखा । इसमें उन्होने इस बात को बल पूर्वक कहा कि प्राचीन काल से ही कुशासको को सहयोग देने से इनकार करने का अधिकार जनता को प्राप्त है ।" यह चेतावनी देने के बाद 1 अगस्त 1920 को औपचारिक तौर पर आन्दोलन शुरू किया गया । 5 नवम्बर 1920 को आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में गाँधी जी ने असहयोग शुरू होने के एक वर्ष के भीतर "स्वराज" दिलाने का वायदा किया। 26 दिसम्बर 1920 को नागपूर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ । इस अधिवेशन कि अध्यदाता श्री विजय राघवाचार्य ने की । नागपुर अधिवेशन ने 14582 प्रतिनिधियों ने भागा लिया (यह कांग्रेस के इतिहास में प्रतिनिधियों की सर्वोच्च सस्था थी ।

असहायोग आन्दोलन का प्रभाव :

असहयोग आन्दोलन का आरम्भ जनवरी 1921 में हुआ और शुरू मे बल मध्य वर्ग की भागीदारी पर दिया गया जैसे छात्र स्कूल–कॉलेज छोड दे और वकील अपना वकालत का पेशा छोड दे। साथ ही राष्ट्रीय स्कूलो और पचांयती अदालतों की स्थापना, एक करोड रूपये का तिलक स्वराज कोष जमा करने और उतने ही सत्याग्राही भरती करने के प्रयास किए गए । धीरे–धीरे विदेशी कपड़ो के बहिष्कार और सार्वजनिक दहन के साथ आन्दोलन और भी उग्र बनता गया ।

17 नवम्बर को प्रिस ऑफ वेल्स के सरकारी दौरे पर भारत आने के दिन दशे व्यापी हड़ताल हुई । उस दिन आन्दोलन के काल का पहला हिसंक कृव्य बंबई ने देखा गाँधी जी ने समुद्र तट पर एक सभा की और विदेशी कपड़ो की होली जलाई लेकिन भीड़ अनुशासन हीन हो गई । और फिर नगर के यूरोपवासियों, एग्लों–इडियन और पारसी लोगो को निशाना बनाया गया । जिन्होने राजकुमार के प्रति वफादारी दिखाई थी पुलिस ने गोली चलायी दंगे हुए और 53 व्यक्ति मारे गए । गाँधी आगबबूला हो गए सविनय अवज्ञा या करबंदी का अभियान स्थागित कर दिया गया इस पर गाँधी जी ने कहा की स्वराज की गंध से मेरे नमूने फटने लगे है । और फिर तय हुआ कि फरवरी 1922 में वारयोली (गुजरात) में प्रयोग के तौर पर मालगुजारी की

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गैर–अदायगी का एक अभियान शुरू किया जाऐगा । जगह का चुनाव सावधानी से किया गया क्योकि यह रैयतवारी का इलाका था जहॉ कोई जमींदार नही था और इसलिए यह खतरा नही था कि मालगुजारी की गैर–अदायगी का अभियान ने बन जाए और वर्गो के नाजुक गठबंधन को भंग न कर दे । पर ऐसा कुछ हुआ नही ऐसा होने से पहले ही असहयोग आन्दोलन वापिस ले लिया गया। गाँधी जी ने स्वंय सेवको से जेल भरने का आहान किया : "हमारी जीत इसी से है कि हम उसी प्रकार हजारो की संख्या में जेल जाए जिस प्रकार बकरों को कसाई खाने ले जाया जाता है । बडी संख्या मे गिरफ्तारियों के आदेश हुए । कुछ ही महिनो के दौर में 30 हजार राष्ट्रवादियें को जेल में ठूस दिया गया । श्री दास ने स्वैच्छिक ढंग से अपनी गिरफ्तारी दी । बाद में मोतीलाल नेहरू लाला लाजपतराय और गोप बंधुदास भी उनके पीछे–पीछे जेल में पहुच गए। सन् 1921 के अंतः तक गाँधी जी को छोडकर शेष सभी प्रमुख नेता जेल मे थे।

विपिन चन्द्र स्वतंत्रता संग्राम :

शिक्षा के बहिष्कार का कार्यक्रम बंगाल में खासतौर से कारंगर साबित हुआ । वहॉ अप्रैल 1921 तक लगभग 20 प्रधान अध्यापक और अध्यापक हर महीने इस्तीफा दे रहे थे । वहा सरकारी अथवा सरकारी सहायता प्राप्त संस्थाओं में 103,107 विद्यार्थी पढ रहे थे । इनमे से 11157 विद्यार्थी स्कूलो से बाहर आ गए थे । खुफिया आधिकारी वैमफोर्ड ने असहयोग तथा खिलाफत आन्दोलन की एक गुप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की थी । इसमें उसने इन आन्दोलनों से सबंधित अखिल भारतीय स्तर पर इक्टठे किए गए ऑकडे प्रस्तुत किए । इन आंकडो से यह पता चलता है कि इन आन्दोलनों का कॉलेजो में तो काफी असर हुआ, लेकिन प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर इसका प्रभाव लगभग न के बराबर था । इस समय राष्ट्रीय विद्यालयों और महाविद्यालयों को स्थापना की गई (जैसे कि अलीगढ में जामिया मिलिया इस्लामिया, जो बाद में दिल्ली ले जाया गया, बनारस में काशी विद्यापीठ और गुजरात विद्यापीठ) जिनमें से 442 संस्थाएं बिहार और उड़ीसा मे 190 बंगाल में, 189 बबई में और 137 सयुक्त प्रांत में थी । इनमें से अनेक अल्पजीवी सिद्ध हुई, क्योंकि एक वर्ष के भीतर स्वराज नहीं आया और पारम्परिक डिग्रियों और नौकरियों का आकर्षण पुनः प्रबल होने लगा । किंतु इनमें से बहुत–सी जीवित भी रहीं और राष्ट्रवाद की पाठशाला का बहुमूल्य कार्य करती रही ।

असहयोग आंदोलन की सफलता के पैमाने से गाँधी को पुरा सन्तोष तो निशिचत ही नही मिलने वाला था । मद्रास को छोड दे तो काउसिल चुवानों का बहिष्कार कमोबेस सफल रहा और मतदान का औसत 5 से 8 प्रतिशत तक रहा । आर्थिक बहिष्कार तीखा और अधिक सफल रहा, आयतित विदेशी कपडो का मूल्य 1920–21 के 102 करोड से गिरकर 1921–22 में 57 करोड रूपय रह गया । ब्रिटिश राज के तैयार सुती कपड़ो का आयात भी इस काल में 129.02 करोड़ गज से गिर कर 95.5 करोड़ गज रह गया । इस सफलता के लिए अशतः व्यापारियों की भागीदारी जिम्मेदार थी । क्योकि उद्योगपतियों ने एक विशेष अवधि तक विदेशी कपड़े न रखने का वादा किया । 1918–22 के दौरान जब बडे उद्योगपति असहयोग के विरोधी और सरकार के समर्थक थे । विनियम दरों मे गिरावट और सरकार की कर वसुली की नीति से दुःखी मारवाड़ी और गुजराती सौदागर काफी सुसंगत राष्ट्रवादी बने रहे । पर यह भी हो सकता है कि विदेशी कपड़ो के आयात से उनके इन्कार के पिछे रूपये की विनिमय दरों में एकाएक आई गिरावट रही हो जिसके कारण आयात बेहद नुकसान का सौदा बन गया । गरीबी से पीडीत ग्रामीण जनता के लिए चरखा आर्थिक और राजनीतिक मुक्ति का एक साधन था । खदर ब्रिटिश मिल में तैयार कपड़े की तुलना मे महगां था लेकिन खदर का इस्तेमाल शहरो तथा गांवो में समान रूप से बड़े पैमाने पर होता था । क्योंकि खदर स्वराज का सांस्कृतिक प्रतीक बन गया था । स्वदेशी के सिद्धान्त में चरखे व खदर का समन्वय हो गया था । चरखा खदर समवित स्वदेशी विचार धारा उस समय आर्थिक व संस्कृति नारा बन गया था । इससे प्रभावित होकर ही पूजीपति तथा बुनकर भी राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम में शामिल हो गऐ । आन्दोलन का एक और कार्यक्रम देश के कई हिसों में काफी लोकप्रिय हुआ यह कार्यक्रम था शराब की दुकानो के सामने धरना देना यह कार्यक्रम आन्दोलन की मूल योजना मे शामिल नही था । इस कार्यक्रम के चलते शराब से होने वाली सरकारी आय में भारी कमी आई । दरसल सरकार को इस बात के लिए बाध्य किया कि खराब शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है । इन आन्दोलन की सर्वाधिक सफल कार्यक्रम था विदेशी कपड़ो का बहिष्कार इस कार्यक्रम के

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

तहत समय सेवक घर जाते थे । विदेशी कपडो से बने वस्त्रों को इक्कठा करते थे । सम्पूर्ण समुदाय इक्कठा होकर उनकी होली जला देता था । 1921 के शुरूआती दौर मे गाँधी जी ने देश व्यापी दौरा किया । इसमें प्रभु दास गाँधी भी उनके साथ थे इस दौर को याद करते हुए वे कहते है कि रास्ते में पड़ने वाले छोटे–छोटे स्टेशनों पर वैसे ही गाड़ी रूकती तो गांधी जी के स्वागत के लिए भीड़ इक्टठी हो जाती थी । गाँधी जी उन्हे कम से कम अपने शिरोवस्त्र हटाने के लिए तुरन्त मना लिया करते थे । जैसे ही गाडी आगे चलती थी । वैसे ही आग की लपटे ऊपर उठती दिखाई देती थी ।

असहयोग आन्दोलन के अप्रत्यक्ष परिणाम भी दिखाई पड़े :

सयुक्त प्रात के अवध क्षेत्र में 1918 से पहले किसान सभा और आन्दोलन शक्तिशाली हो रहे थे । वही दुसरे क्षेत्रों में जवाहर लाल नेहरू असहयोग आन्दोलन चला रहे थे । इस आन्दोलन ने पहले से चल रहे आन्दोलन को ओर तेज कर दिया । अवघ के दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व में किसान विद्रोह की संबंध बाबा राम चन्द्र से था। जनवरी और मार्च 1921 के मध्य यह विदोह रायबरेली, प्रतापगढ़, फेजाबाद और सुल्तानपूर व्यापक किसान विद्रोह के रूप में अपनी चरम सीमा पर पहुच गऐ । दक्षिण भारत के चार भाषायी क्षेत्रों में तीन की इस आन्दोलन में प्रभावी भागीदारी रही । जब की कर्नाटक अप्रभावित रहा मद्रास व महाराष्ट्र मे कुछ गैर–ब्राह्मण निचली जातियों की भागीदारी रही । आन्ध्र के डेल्टा क्षेत्र और बंगाल में वन सत्यग्रहों के रूप में शक्तिशाली आदिवासी आन्दोलन उठे । मद्रास, बंगाल ओर असम में श्रमिकों में असन्तोष रहा तथा बम्बई और बंगाल में व्यपारियों ने इसमें भाग लिया । लेकिन दूसरी और अक्षर जनता ने अहिसा के गाँधी वादी पंथ की सीमाओं को तौड़ा उच्छृखल भीड़ की गाँधी ने निदा की मगर उसे नियन्त्रित करने में असफल रहे । आखिरी हद उतर प्रदेश के गोरखपूर जिलें मे 4 फरवरी 1922 के चोरी–चोरा कांड से टुटी गांव वालो ने स्थानिय थानें में 22 पुलिस वालो को जिन्दा जला दिया । इसलिए 11 फरवरी 1922 को असहयोग आन्दोलन वापिस ले लिया गया ।

निष्कर्ष :

इस प्रकार गाँधी जी ने 1915 में भारत आने के बाद आरम्भ के तीन आन्दोलनों चम्परन, खेड़ा और अहमदाबाद के स्थानिय सत्य ग्रह के आन्दोलनों में महात्मा गाँधी अपना लोहा मनवा चुके थे । गाँधी जी ने मुस्लिम समुदाय का समर्थन खिलाफत कमेटी के माध्यम से प्राप्त किया तथा कांग्रेस ने कलकत्ता अधिवेशन में कुछ कांग्रेसी नेता के विरोध के बाद भी अहसयोग पारित करवाया । आन्दोलन 1921 को आरम्भ हुआ तथा भारत की जनता ने इसमें बढ़ चढ़ का भाग लिया । इस आन्दोलन के दौरान गोरखपूर मे हुई घटना के कारण इस हिसंक घटना के कारण इस आन्दोलन को 11 फरवरी 1922 को वापिस लेना पड़ा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. मोहन दास कर्मचन्द गाँधी सत्य के प्रयोग तथा आत्म कथा पृ॰–03
2. अवतार सिंह जसवाल आजादी की लडाई, गाँधी और भगतसिंह पृ॰–59
3. वही–पृ॰, 61–62.
4. विपिन चन्द्र, अभलेश त्रिपाठी, वरन दे स्वतन्त्रता संग्राम पृ॰–95
5. शेखर बद्योपाध्याय, प्लासी से विभाजन और उसके बाद पृ॰–283
6. आर॰एल॰ शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास पृ॰–574
7. सुमित सरकार आधुनिक भारत पृ॰–216
8. मोहन दास कर्मचंद गाँधी सत्य के प्रयोग अथवा आत्म कथा पृ॰–486
9. शेखर बद्योपाध्याय प्लासी से विभाजन और उसके बाद पृ॰–297
10. डा. ममता गर्ग भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में काग्रेस दल की भूमिका पृ॰–034
11. मोहन दास कर्मचंद गाँधी सत्य के प्रयोग अथवा आत्म कथा पृ॰–486

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

12. शेखर बद्योपाध्याय प्लासी से विभाजन और उसके बाद पृ॰–298
13. सुमित सरकार आधुनिक भारत पृ॰–217
14. आर॰एल॰ शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास पृ॰–576
15. डा. ममता गर्ग भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में काग्रेस दल की भूमिका पृ॰–035
16. सुमित सरकार आधुनिक भारत पृ॰–218
17. शेखर बद्योपाध्याय प्लासी से विभाजन और उसके बाद पृ॰–297
18. विपिन चन्द्र, अभलेश त्रिपाठी, वरन दे स्वतन्त्रता संग्राम पृ॰–103
19. शेखर बद्योपाध्याय प्लासी से विभाजन और उसके बाद पृ॰–298
20. विपिन चन्द्र, स्वतन्त्रता संग्राम पृ॰–103
21. सुमित सरकार आधुनिक भारत पृ॰–225
22. शेखर बद्योपाध्याय प्लासी से विभाजन और उसके बाद पृ॰–299
23. सुमित सरकार आधुनिक भारत पृ॰–225
24. विपिन चन्द्र, स्वतन्त्रता संग्राम पृ॰–103
25. आर॰एल॰ शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास पृ॰–578
26. सुमित सरकार आधुनिक भारत पृ॰–227
27. शेखर बद्योपाध्याय प्लासी से विभाजन और उसके बाद पृ॰–300
28. आर॰एल॰ शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास पृ॰–581
29. वही॰ पृ॰580
30. वही॰ पृ॰582
31. शेखर बद्योपाध्याय प्लासी से विभाजन और उसके बाद पृ॰–301